शकुन

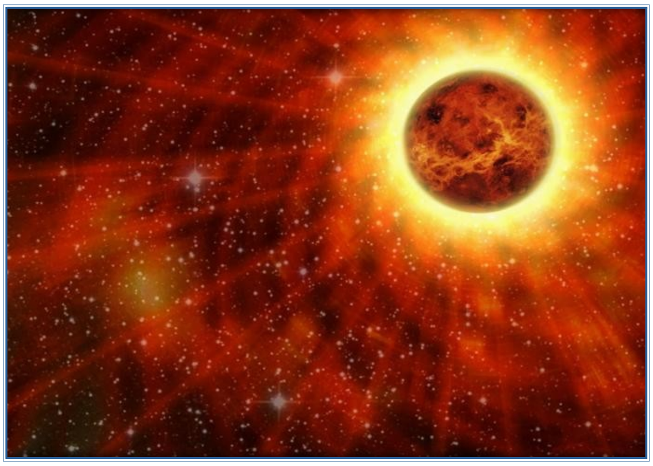

शकुन समाज में प्रचलित एक अवधारणा है जिसमें यह माना जाता है कि कुछ विशेष प्रकार की परिघटनाएँ हमारे भविष्य का संकेत देती हैं। अनुकूल भविष्यवाणी करने वाले शकुन को शुभ शकुन तथा प्रतिकूल भविष्यवाणी करने वाले शकुनों को अपशकुन कहा जाता है।

न केवल भारत में अपितु विश्व भर में ये शकुन प्रचलित हैं। भारतीय संस्कृति में शकुन का संकेत वेदों पुराणों व धार्मिक ग्रंथों में भी मिलता है। महाभारत व रामायण जैसे महाकाव्यों में भी कई जगह शकुनों की बात कही गई है। ज्योतिष में भी शकुनों पर विशेष विचार किया जाता है। प्रश्न कुंडली की विवेचना में शकुनों का महत्व विशेष है। प्राचीन काल में ये शकुन लोकवार्ता के द्वारा ही पीढ़ी दर पीढ़ी पहुंचते रहे हैं। वैज्ञानिक दृष्टि से इन शकुनों को बहुधा अंधविश्वास ही माना जाता हैं।

शुभ शकुनों में पूछे गये प्रश्न सफल व अपशकुनों में पूछे गये प्रश्न असफल होते देखे गये हैं। शकुन पृथ्वी से आकाश से स्वप्नों से व शरीर के अंगों से संबंधित हो सकते हैं। किसी भी कार्य के वक्त घटित होने वाले प्राकृतिक व अप्राकृतिक तथ्य अच्छे व बुरे फल की भविष्यवाणी करने में सक्षम होते है। शुभ शकुन ब्राह्मण घोड़ा हाथी न्योला बाज मोर। दूध फल फूल व वेद ध्वनि का सोर। अन्न सिंहासन जल

कलश पशु एक बधन्त। न्योला चापा मछली और अग्नि प्रज्वलंत। छाता वैश्या पगड़ी अंजन ऐना शस्त्र। कन्या रत्न स्त्री धोबी धोया वस्त्र। घृत मिट्टी अस्त्र शहद मदिरा वस्त्र श्वेत। गोरोचन सरसों अमिष गन्ना खज्जन भेद। बिन रोदन मुर्दा मिले पालकी भरदुल गीत। ध्वज अकुंश बकरा पडे सम्मुख अपना गीत।

बालक संग स्त्री मिले नौ बेटा बैल सफेद। साधु सुधा सुरतर-पड़े सम्मुख चारों वेद । कूड़ा से भरी टोकरी जो सम्मुख पडंत। पाछे घट खाली पड़े निश्चय काज बनंत।। प्रिय वाणी कानों पड़े सम्मुख वाहन भार। कह कवि ये शुभ शकुन यात्रा चलती बार।

अर्थात् ब्राह्मण घोड़ा हाथी न्योला बाज मोर दूध दही फल फूल कमल वेदध्वनि अन्न सिंहासन जल से भरा कलश बंधा हुआ एक पशु न्योला चापा (चाहा पक्ष) मछली प्रज्वलित अग्नि छाता वैश्या पनाली अंजन ऐना शस्त्र रत्न स्त्री कन्या धुले हुए वस्त्र सहित धोबी घी मिट्टी सरसों मांस गन्ना खज्जन पक्ष रोदन रहित मुर्दा पालकी भारद्वाज पक्षी ध्वजा अंकुश बकरा अपना प्रिय मित्र बच्चे के सहित स्त्री गाय या गोह के सहित बछड़ा सफेद बैल साधु अमृत कल्पवृक्ष चारों वेद शहद शराब गोरोचन आदि में से कुछ भी सम्मुख पड़े या कूड़े से भरी टोकरी प्रिय वाणी या सामान से लदा वाहन यदि यात्रा के वक्त सम्मुख पड़ जाए तो निश्चय ही इच्छा पूर्ति का संकेत करते हैं।

खाली घड़ा पीठ पीछे हो तो अच्छा है।ये शुभ शकुन हैं। नीलकण्ठ छिक्कर-पिक्कर वानर कौवी भालु। जै कुकर दाएं पड़े तो सिद्ध होय सब काजु। अर्थात् नीलकण्ठ छिक्कर नामक विशेष मृग पिक्कर पक्षी कौवी (स्त्री संज्ञक) भालू व कुत्ता यदि दाएं हाथ पर पड़े तो कार्य सिद्ध होता है। मृग बाएं ते दाहिने जो आवे तत्काल। बाएं गर्दभ रेकंजा सिद्धि होय सब काज। अर्थात् यदि हिरण बायीं तरफ से रास्ता काटकर दायीं तरफ आ जाए या बायीं तरफ गधा बोलना प्रारंभ कर दे तो शुभ शकुन है।

खड़ा कोबरा सूकरा जाहक कछुआ गोह। ये शब्द कानों पड़े निश्चय कारज होय। पर दर्शन हो जाएं तो महाअशुभ होय। अतिहि कु शकुन जानिये काट सके ना कोय। अर्थात् यदि खरगोश सर्प सूअर जाहक पशु कछुआ व गोह के शब्द कानों में पड़े तो अत्यंत शुभ शकुन समझें। परंतु यदि ये प्रत्यक्ष सामने पड़ जाएं तो महा अशुभ हैं। बानर भालु दर्शन भले नाम के सुनते हानि। कह कवि विचार के तब आगे करौ पदान।

अर्थात् यदि वानर भालू यात्रा आरंभ वक्त आगे जाए तो उत्तम शकुन है परंतु यदि इनका नाम कानों में पड़े तो अपशकुन का द्योतक है। अपशकुनुन विचार दांए गर्दभ शब्द हो सम्मुख काला धान्य। टूटी खाट आगे मिले तो बहुत हानि। कूकूर लोटे भुम्म पर अथवा मारे कान। पांच भैंस सम्मुख पड़ें निश्चय होवे धन। एक अजाः नौ स्त्री बिल्ली दो लड़न्त। छह कुत्ता आगे पड़ें नहीं बात में तंत। तीन गाय दो बानिया एक बछड़ा एक शूद्र। हाथी सात सम्मुख निश्चय बिगड़े बुद्धि। भैंसा पर बैठा हुआ मनुष्य सम्मुख होय। निश्चय हानि होयेगी बचा सके ना कोय ।

जननी का तिरस्कार होय या हो अकाल वृष्टि। क्षत्री चार सम्मुख निश्चय महाअनिष्ट । तीन विप्र बैरागिया संन्यासी केश खुलंत। भगवा व स्त्री सम्मुख पड़े निश्चय कारण अंत। बंध्या रजः रजस्वला भूसा हड्डी चामं। अंधा बहरा कूबड़ा विधवा लगड़ा पांव । ईंधन लक्कड़ उन्मादिया भैंसा दो लड़ंत। गुंड मट्ठा कीचड़ पड़े सम्मुख छींक हुवंत । हिजड़ा विष्ठा तेल जो मालिश तेल मनुष्य। अंग भंग नंगा पतित रोगी पूरा सुस्त। गंजा भिजे वस्त्र सों चर्बी शत्रु सांप। नमक औषधि गिरगिरा कुटंबी झगड़े आप ।

कटु बचन सम्मुख पड़े जौ यात्रा चलती बार। कह कवि हानि महा बिगड़े सारे काज। अर्थात् यदि यात्रा के समय गधा दायीं तरफ बोले या कोई सामने से टूटी खाट लाता हुआ मिले कारज भंग होता है। यदि कुत्ता भूमि पर लेटे या कान फड़फड़ाये पांच भैंस सामने आये एक बकरी नौ स्त्री दो बिल्ली लड़ती हुई छः कुत्ते तीन गाय दो वैश्य एक

बैल एक शूद्र सात हाथी या भैंसे पर बैठा हुआ व्यक्ति यदि सम्मुख पड़े तो अपशकुन का सूचक है। यात्रा में चलते समय जननी का तिरस्कार करे या अकाल वर्षा हो चार क्षत्रिय तीन ब्राह्मण बैरागी सन्यासी खुले केशों वाला गेरूरा वस्त्र धारण करने वाला सम्मुख पड़ जाए तो अपशकुन है।

इसी प्रकार बांझ औरत स्त्री का रज रजोवती स्त्री भूसा हड्डी चमड़ा अंधा बहरा कूबड़ा विधवा स्त्री जलाने वाली लकड़ी उपला पागल गुड़ मट्ठा कीचड़ सामने आये दो भैंसे लड़ते हुए नपुसंक विष्ठा तेल मालिश किये आदमी अंग भंग नंगा नीच पुरुष दीर्घ रोगी गंजा भीगे वस्त्रों में चर्बी सर्प शत्रु नमक औषधि गिरगिट सामने आ जाए अपने ही कुटुंबी सामने लड़ते हों सामने कोई छींक दे या यात्रा के वक्त अप्रिय बचन सुनाई पड़ें तो अपशकुन का सूचक है। काक स्पर्श व छिपकली के गिरने को अशुभ समझा गया है।

यदि कौआ अचानक शोरगुल करे या किसी के सिर पर बैठे तो आर्थिक हानि दर्शाता है। यदि स्त्री के सिर पर बैठे तो पति को वित्तीय कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। संध्या के समय मुर्गों की ध्वनियां महामारी दर्शाती हैं।

जब मछलियां जल की सतह पर छलांग मारें मेढक टर्र-टर्र करे बिल्ली भूमि खोदे चीटियां अपने अंडों को स्थानांतरित करें सांपों का जोड़ा व पशु आकाश की ओर देखे पालतू पशु बाहर जाने से घबराएं तो तुरंत ही वर्षा होती है। ये वर्षा के लिए शुभ शकुन है।

यदि रात्रि में दीपकीट दिखाई दे कीड़े या सरीसृप घास के ऊपर बैठें तो भी तत्काल वर्षा होती है। यदि वर्षा ऋतु के दौरान सायंकाल में गीदड़ों की चिल्लाहट सुनाई दे तो बिल्कुल वर्षा नहीं होती। मांसभक्षी पशु-पक्षी का दिखाई देना अशुभ व शाकाहारी पशु पक्षी प्रायः शुभ शकुन का संकेत देते हैं।

ज्योतिष में शकुनों अपशकुनों का विशेष विचार प्रश्न आदि में किया जाता है। साथ ही साथ मेदिनीय ज्योतिष में भी शकुन अपना विशेष महत्व रखते हैं -वर्षा होगी या नहीं होगी कम होगी या अधिक होगी इस प्रकार की भविष्य वाणियां भी शकुनों के आधार पर की जाती हैं कुछ उदाहरण निम्न हैं यदि आसमान बादलों से घिरा हो व पालतू कुत्ता घर से बाहर न जाए तो वर्षा का सूचक है।

यदि आसमान में चील 400 फुट की ऊंचाई पर उड़ रही हो तो भी वर्षा होने वाली होती है। यदि मकड़ी घर के बाहर जाला बनाए तो वर्षा ऋतु जाने का सूचक है। मेढकों की टर्रराहट वर्षा का संकेत है। मोर का नृत्य तथा शोर भी वर्षा का सूचक है।

उल्लू और कौए से जुड़े ये शकुन-अपशकुन जो करोड़पति को कंगाल तो कंगाल को बना देते हैं करोड़पति

हिंदू धर्म में बहुत से पक्षी और जानवर ऐसे हैं जिनके बारे लोगों में भ्रांतियां फैली हुई है। ऐसे ही कौए और उल्लू से जुड़े हुए कई शकुन-अपशकुन बताए गए हैं। आइए आज हम जानते हैं ऐसे ही कुछ संकेतों के बारे में

कौए से जुड़े शकुन-अपशकुन

(1) अगर बहुत सारे कौए मिलकर किसी जगह का घर में एकत्रित होकर शोर करें, तो उस जगह या घर में रहने वालों पर बड़ी भारी मुसीबत आने वाली होती है।

(2) यदि उड़ता हुआ कौआ किसी के सिर पर बीट करे, तो उसे रोग व संताप होता है और यदि हड्डी का टुकड़ा गिरा दे, तो उस व्यक्ति पर भारी संकट आ सकता है।

(3) यदि कौआ पंख फडफ़ड़ाता हुआ उग्र स्वर में बोलता है, तो यह अशुभ संकेत है।

(4) कौआ यदि यात्रा करने वाले व्यक्ति के सामने आकर सामान्य स्वर में कांव-कांव करे और चला जाए तो कार्य सिद्धि की सूचना देता है।

(5) यदि किसी महिला के सिर पर कौआ बैठता है, तो उसके पति को गंभीर संकट का सामना करना पड़ सकता है।

उल्लू से जुड़े शकुन-अपशकुन

(1) यदि कोई उल्लू अगर लगातार किसी के घर में आने लग जाए तो मान लीजिये शीघ्र ही उस घर के उजड़ने के लक्षण है। या फिर उस घर के मालिक पर जल्द ही कोई बड़ी विपत्ति आने वाली होती है।

(2) अगर किसी मकान के दरवाजे पर उल्लू तीन दिन तक लगातार रोदन करता है, तो उसके भवन में चोरी या डकैती होने की संभावना है। अर्थात उसे किसी न किसी रूप में धन की हानि अवश्य होती है।

(3) अगर किसी मेहमान के पीछे की तरफ उल्लू दिखाई दे तो मनचाही मुराद पूरी होती है।

(4) यदि उल्लू रात में यात्रा कर रहे व्यक्ति को होम-होम की आवाज करता मिले तो शुभ फल मिलता है।

(5) अगर रात को सफेद उल्लू दिख जाए तो यह अच्छे समय आने का संकेत है।

कोई भी अशुभ शकुन होने पर करें इस प्रभावशाली मंत्र का जाप

शास्त्रों की बात, जानें धर्म के साथ प्राचीन काल से ही मानव शकुन-अपशकुन का विचार करता आ रहा है। महाकवि तुलसीदास ने रामचरित मानस में 'बैठी शगुन मनावति माता' कहकर शकुन विचार को स्वीकार किया है। अत: शकुन शास्त्र आदि काल से ही हमारी परम्परा का प्रचार व प्रसार पाकर जनमानस में अपना अस्तित्व बनाए हुए हैं। आज जीवन इतनी तीव्रता से बदल रहा है कि शकुन का विचार करने का अवसर ही नहीं मिलता, यह सत्य है, परन्तु शकुन तो जाने या अनजाने में होते ही रहते हैं और संभवत: होते भी रहेंगे।

शास्त्रों की बात, जानें धर्म के साथ

प्राचीन काल से ही मानव शकुन-अपशकुन का विचार करता आ रहा है। महाकवि तुलसीदास ने रामचरित मानस में 'बैठी शगुन मनावति माता' कहकर शकुन विचार को स्वीकार किया है। अत: शकुन शास्त्र आदि काल से ही हमारी परम्परा का प्रचार व प्रसार पाकर जनमानस में अपना अस्तित्व बनाए हुए हैं।

आज जीवन इतनी तीव्रता से बदल रहा है कि शकुन का विचार करने का अवसर ही नहीं मिलता, यह सत्य है, परन्तु शकुन तो जाने या अनजाने में होते ही रहते हैं और संभवत: होते भी रहेंगे।

कुछ शकुन मनुष्य स्वयं उत्पन्न करता है और कुछ शकुन देव कृपा से स्वयं ही घटित होते हैं। मनुष्य के द्वारा बनाया गया शकुन शुभता के लिए ही होता है जबकि स्वयं घटित होने वाला शकुन मनुष्य की इच्छा पर निर्भर नहीं होता। अब न मानने वाले तो प्रभु की सत्ता को भी स्वीकार नहीं करते तब वे भला शकुन को क्या मानेंगे? उन्हें यह कहने में कोई आपत्ति नहीं होगी कि नाक है तो छींक आएगी ही। बिल्ली इधर-उधर घूमने वाला पशु है, वह सड़क से गुजरेगी ही। कौवा पक्षी है तो उसका काम ही कांव-कांव करना है तो वह क्यों नहीं करेगा? आदि-आदि।

इन तर्कों के उत्तर में यही कहना है कि न मानने से प्रभु का अस्तित्व समाप्त नहीं हो जाता। विश्वास और श्रद्धा से ही भगवान को पाया जा सकता है, समझा जा सकता है। इसी भांति न मानने से भी शकुन का फल तो घटित होने से रुकेगा नहीं। शकुन के उपस्थित होने का तात्पर्य है कि कुछ न कुछ फल घटित होगा ही।

मौसम विज्ञान विभाग आधुनिक विज्ञान की देन है। अरबों रुपए का व्यय होता है तब एक प्रयोगशाला बनती है। इसके पश्चात भी अरबों रुपए व्यय करके भी मौसम की शत-प्रतिशत सटीक भविष्यवाणी नहीं कर पाता तो एक चिडिय़ा धूल को अपने ऊपर उछाल-उछाल करके वर्षा का संकेत दे देती है। ज्योतिषी से प्रत्येक विचार करवा करके यात्रा के लिए प्रस्थान करते समय अगर बिल्ली रास्ता काट जाए तो ज्योतिषी के विचार धरे के धरे रह जाते हैं। इस कटु सत्य को लगभगहर कोई स्वीकार करता है।

घर से वर या वधू के विदा होने के उपरांत घर वाले अपने घर के किसी भी व्यक्ति को उस दिन सिर नहीं धोने देते। दामाद के विदा होने के उपरांत उस दिन घर में झाड़ू नहीं लगाई जाती। यह सब क्यों? क्या यह हमारा पिछड़ापन है? संभवत: विद्‌वान वर्ग स्वीकार करेगा कि यह हमारा पिछड़ापन है जिसके ऊपर कोई जिम्मेदारी नहीं या वह जिम्मेदारी को स्वीकार नहीं करता। परन्तु यह अशुभ होता है इसलिए सिर नहीं धोते या जल आदि नहीं बहाते हैं।

घर से यात्रा के लिए जाते समय द्‌वार पर परिवार की कन्या या सुहागिन स्त्री मिट्टी के पात्र में जल लेकर खड़ी हो जाती है। किसी भी शुभ कार्य या यात्रा के लिए जाते समय दही या मिष्ठान खाकर ही जाना शुभ माना जाता है। ये बातें बहुत छोटी हैं परन्तु इनके अर्थ बड़े हैं। आज का अति उन्नत विज्ञान पूर्ण रूप से शकुन के शुभ होने पर ही टिकता है और शकुन अशुभ हो तो ध्वस्त ही होता है और क्योंकि प्रत्येक कार्य के प्रारंभ में शकुन घटित होता ही है। उसे हम चाहे मानें या न मानें।

प्राचीनकाल से ही मनुष्य का विश्वास शकुन को मानता आ रहा है। हालांकि आजकल सभ्य कहलाने वाले लोग इसे अंधविश्वास कहते हैं। इस पर भी उन्हीं को कभी-कभी कहते सुना जाता है कि भाई बाईं आंख फड़क रही है-यह बात कहकर दबे स्वर में क्या वह शकुन की बात नहीं कहते? आंख फड़कना क्या है? व्यापारी, व्यापार

के प्रारंभ में उधार सामान नहीं देते-यह क्या है? बिल्ली रास्ता काटे, कोई छींके, कौवा कांव-कांव करे, यह क्या है? यह शकुन है।

हमारे देश में निःसंदेह शकुन के नाम पर कुछ चेहरे सिकुड़ जाते हैं परन्तु वह आधुनिक कहलाए जाने वाले लोग इस बात को मना नहीं कर सकते चाहे वह विदेशियों के सम्पर्क में रहे हों। विदेशों में भी घोड़े की नाल को मुख्य द्वार पर टांगा जाता है। यह शकुन इतना प्रचलित हुआ कि अब हमारे घरों में भी काले घोड़े की नाल को टांगा जाता है जबकि यह शकुन भारत की ही देन है और हम इस क्रिया को विदेशियों की नकल में कर रहे हैं।

किसी भी कार्य को प्रारंभ करते समय स्वाभाविक रूप में हमारी यह इच्छा बलवती हो उठती है कि मेरा यह कार्य सफल होगा भी या नहीं! इसी जिज्ञासा का उत्तर शकुन से मिलता है। पशु-पक्षी के स्वर, अंगों का फड़कना आदि शकुन माने जाते हैं। इस शकुन विद्या को महाभारत, रामायण आदि ग्रंथों में भी दोहराया गया और इसके महत्व को स्वीकार किया गया। शकुन विषय की एक सूचना होती है। शुभ शकुन के लाभ उठाइए और अशुभ शकुन का उपाय करके उसकी अशुभता से सुरक्षित हो जाइए।

अंगों का फड़कना भी शकुन में एक महत्वपूर्ण योगदान करता है। यह शकुन शीघ्र प्रभावी होता है। मान्यता है कि पुरुष का दाहिना अंग और स्त्री का बायां अंग ही शुभ होता है अतः विवरण पुरुष स्थिति में किया गया है। स्त्री जातक उस वर्णन को दाहिने के स्थान पर बायां और बाएं के स्थान पर दाहिना पढ़ करके वैसा ही फल समझे जैसा लिखा गया है।

कौवे की स्थिति और उसका स्वर बहुत ध्यान देने योग्य है। कहीं जाने के लिए निकलते समय कौवा गाय पर बैठे, गोबर पर बैठे या हरे पत्ते के वृक्ष पर बैठे तो देखने वाले को स्वादयुक्त भोजन प्राप्त होता है। कहीं जाते समय कौवा चोंच में तिनका

उठाए दिखे तो लाभ ही लाभ की आशा करनी चाहिए। कौवे धन की स्थिति बताते हैं तो रोगी हुए व्यक्ति को उठने को भी कहते हैं।

शकुन की बात करने पर नाखूनों का स्मरण स्वयं हो आता है और प्राय: देखने में आता है कि किसी-किसी के नाखूनों पर काले या सफेद चिन्ह प्रकट होते हैं और कुछ समय के पश्चात स्वयं लुप्त भी हो जाते हैं। यह शकुन भविष्य की सूचना देते हैं। नाखूनों के काले चिन्ह प्राय: अशुभ फल ही देते हैं अत: केवल सफेद चिन्हों का ही विचार किया जाना चाहिए।

आपको जब कभी भी नाखून पर सफेद चिन्ह मिलें तो चिंता की कोई बात न मानकर समय का लाभ उठाना चाहिए। अगर काला चिन्ह मिले तो दुर्भाग्य का सूचक होता है। अपने प्रभु आदि का स्मरण करके उनकी शरण में ही जाना चाहिए। कोई भी अशुभ शकुन होने पर निम्न मंत्र का जाप करें-

ॐ नम: शिवं दुर्गा गणपतिं कार्तिकयं दिनेश्वरम्।

धर्म गंगा च तुलसी राधां लक्ष्मीं सरस्वतीम्।।

नामान्येतानि भद्राणि जले स्नात्वा च यो जपेत।

वांछितं च लभेत सोऽपि दु:स्वप्र: शुभवान भवेत्।।

शास्त्रों की बात, जानें धर्म के साथ

प्राचीन काल से ही मानव शकुन-अपशकुन का विचार करता आ रहा है। महाकवि तुलसीदास ने रामचरित मानस में 'बैठी शगुन मनावति माता' कहकर शकुन विचार को स्वीकार किया है। अत: शकुन शास्त्र आदि काल से ही हमारी परम्परा का प्रचार व प्रसार पाकर जनमानस में अपना अस्तित्व बनाए हुए हैं। आज जीवन इतनी तीव्रता

से बदल रहा है कि शकुन का विचार करने का अवसर ही नहीं मिलता, यह सत्य है, परन्तु शकुन तो जाने या अनजाने में होते ही रहते हैं और संभवत: होते भी रहेंगे।

कुछ शकुन मनुष्य स्वयं उत्पन्न करता है और कुछ शकुन देव कृपा से स्वयं ही घटित होते हैं। मनुष्य के द्वारा बनाया गया शकुन शुभता के लिए ही होता है जबकि स्वयं घटित होने वाला शकुन मनुष्य की इच्छा पर निर्भर नहीं होता। अब न मानने वाले तो प्रभु की सत्ता को भी स्वीकार नहीं करते तब वे भला शकुन को क्या मानेंगे? उन्हें यह कहने में कोई आपत्ति नहीं होगी कि नाक है तो छींक आएगी ही। बिल्ली इधर-उधर घूमने वाला पशु है, वह सड़क से गुजरेगी ही। कौवा पक्षी है तो उसका काम ही कांव-कांव करना है तो वह क्यों नहीं करेगा? आदि-आदि।

इन तर्कों के उत्तर में यही कहना है कि न मानने से प्रभु का अस्तित्व समाप्त नहीं हो जाता। विश्वास और श्रद्धा से ही भगवान को पाया जा सकता है, समझा जा सकता है। इसी भांति न मानने से भी शकुन का फल तो घटित होने से रुकेगा नहीं। शकुन के उपस्थित होने का तात्पर्य है कि कुछ न कुछ फल घटित होगा ही।

मौसम विज्ञान विभाग आधुनिक विज्ञान की देन है। अरबों रुपए का व्यय होता है तब एक प्रयोगशाला बनती है। इसके पश्चात भी अरबों रुपए व्यय करके भी मौसम की शत-प्रतिशत सटीक भविष्यवाणी नहीं कर पाता तो एक चिडिय़ा धूल को अपने ऊपर उछाल-उछाल करके वर्षा का संकेत दे देती है। ज्योतिषी से प्रत्येक विचार करवा करके यात्रा के लिए प्रस्थान करते समय अगर बिल्ली रास्ता काट जाए तो ज्योतिषी के विचार धरे के धरे रह जाते हैं। इस कटु सत्य को लगभगहर कोई स्वीकार करता है।

घर से वर या वधू के विदा होने के उपरांत घर वाले अपने घर के किसी भी व्यक्ति को उस दिन सिर नहीं धोने देते। दामाद के विदा होने के उपरांत उस दिन घर में झाड़ू नहीं लगाई जाती। यह सब क्यों? क्या यह हमारा पिछड़ापन है? संभवत: विद्‌वान वर्ग स्वीकार करेगा कि यह हमारा पिछड़ापन है जिसके ऊपर कोई जिम्मेदारी नहीं या वह जिम्मेदारी को स्वीकार नहीं करता। परन्तु यह अशुभ होता है इसलिए सिर नहीं धोते या जल आदि नहीं बहाते हैं।

घर से यात्रा के लिए जाते समय द्‌वार पर परिवार की कन्या या सुहागिन स्त्री मिट्टी के पात्र में जल लेकर खड़ी हो जाती है। किसी भी शुभ कार्य या यात्रा के लिए जाते समय दही या मिष्ठान खाकर ही जाना शुभ माना जाता है। ये बातें बहुत छोटी हैं परन्तु इनके अर्थ बड़े हैं। आज का अति उन्नत विज्ञान पूर्ण रूप से शकुन के शुभ होने पर ही टिकता है और शकुन अशुभ हो तो ध्वस्त ही होता है और क्योंकि प्रत्येक कार्य के प्रारंभ में शकुन घटित होता ही है। उसे हम चाहे मानें या न मानें।

प्राचीनकाल से ही मनुष्य का विश्वास शकुन को मानता आ रहा है। हालांकि आजकल सभ्य कहलाने वाले लोग इसे अंधविश्वास कहते हैं। इस पर भी उन्हीं को कभी-कभी कहते सुना जाता है कि भाई बाईं आंख फड़क रही है-यह बात कहकर दबे स्वर में क्या वह शकुन की बात नहीं कहते? आंख फड़कना क्या है? व्यापारी, व्यापार के प्रारंभ में उधार सामान नहीं देते-यह क्या है? बिल्ली रास्ता काटे, कोई छींके, कौवा कांव-कांव करे, यह क्या है? यह शकुन है।

हमारे देश में नि:संदेह शकुन के नाम पर कुछ चेहरे सिकुड़ जाते हैं परन्तु वह आधुनिक कहलाए जाने वाले लोग इस बात को मना नहीं कर सकते चाहे वह विदेशियों के सम्पर्क में रहे हों। विदेशों में भी घोड़े की नाल को मुख्य द्वार पर टांगा जाता है। यह शकुन इतना प्रचलित हुआ कि अब हमारे घरों में भी काले घोड़े की नाल को टांगा जाता है जबकि यह शकुन भारत की ही देन है और हम इस क्रिया को विदेशियों की नकल में कर रहे हैं।

किसी भी कार्य को प्रारंभ करते समय स्वाभाविक रूप में हमारी यह इच्छा बलवती हो उठती है कि मेरा यह कार्य सफल होगा भी या नहीं! इसी जिज्ञासा का उत्तर शकुन से मिलता है। पशु-पक्षी के स्वर, अंगों का फड़कना आदि शकुन माने जाते हैं। इस शकुन विद्या को महाभारत, रामायण आदि ग्रंथों में भी दोहराया गया और इसके महत्व को स्वीकार किया गया। शकुन विषय की एक सूचना होती है। शुभ शकुन के लाभ उठाइए और अशुभ शकुन का उपाय करके उसकी अशुभता से सुरक्षित हो जाइए।

अंगों का फड़कना भी शकुन में एक महत्वपूर्ण योगदान करता है। यह शकुन शीघ्र प्रभावी होता है। मान्यता है कि पुरुष का दाहिना अंग और स्त्री का बायां अंग ही शुभ होता है अत: विवरण पुरुष स्थिति में किया गया है। स्त्री जातक उस वर्णन को दाहिने

के स्थान पर बायां और बाएं के स्थान पर दाहिना पढ़ करके वैसा ही फल समझे जैसा लिखा गया है।

कौवे की स्थिति और उसका स्वर बहुत ध्यान देने योग्य है। कहीं जाने के लिए निकलते समय कौवा गाय पर बैठे, गोबर पर बैठे या हरे पत्ते के वृक्ष पर बैठे तो देखने वाले को स्वादयुक्त भोजन प्राप्त होता है। कहीं जाते समय कौवा चोंच में तिनका उठाए दिखे तो लाभ ही लाभ की आशा करनी चाहिए। कौवे धन की स्थिति बताते हैं तो रोगी हुए व्यक्ति को उठने को भी कहते हैं।

शकुन की बात करने पर नाखूनों का स्मरण स्वयं हो आता है और प्राय: देखने में आता है कि किसी-किसी के नाखूनों पर काले या सफेद चिन्ह प्रकट होते हैं और कुछ समय के पश्चात स्वयं लुप्त भी हो जाते हैं।

यह शकुन भविष्य की सूचना देते हैं। नाखूनों के काले चिन्ह प्राय: अशुभ फल ही देते हैं अत: केवल सफेद चिन्हों का ही विचार किया जाना चाहिए।

आपको जब कभी भी नाखून पर सफेद चिन्ह मिलें तो चिंता की कोई बात न मानकर समय का लाभ उठाना चाहिए। अगर काला चिन्ह मिले तो दुर्भाग्य का सूचक होता है। अपने प्रभु आदि का स्मरण करके उनकी शरण में ही जाना चाहिए। कोई भी अशुभ शकुन होने पर निम्न मंत्र का जाप करें-

ॐ नम: शिवं दुर्गा गणपतिं कार्तिकयं दिनेश्वरम्।

धर्म गंगा च तुलसी राधां लक्ष्मीं सरस्वतीम्।।

नामान्येतानि भद्राणि जले स्नात्वा च यो जपेत।

वांछितं च लभेत सोऽपि दु:स्वप्र: शुभवान भवेत्।।

कोई उल्लू किसी के भी भवन पर बैठना प्रारंभ कर दे तो वह शीघ्र ही उजड़ जाता है। अगर किसी घर की छत पर बैठ कर बोलता है तो उस घर के स्वामी अथवा परिवार के सदस्य की मृत्यु होती है। अगर किसी के मुख्य द्वार पर उल्लू तीन दिन तक लगातार रोता है तो उसके घर में चोरी होती है।

रात्रि में यात्रा कर रहे व्यक्ति को कोई उल्लू 'होम-होम' की ध्वनि करता मिले तो शुभ फल मिलता है क्योंकि इसी प्रकार की ध्वनि अगर वह बार-बार करता है तो इसकी इच्छा भोग करने की होती है।

शकुन शास्त्रियों का विश्वास है कि उल्लू का बाईं ओर बोलना और दिखाई देना शुभ रहता है, यात्री के पीछे की तरफ दिखाई दे तो कार्य में सफलता मिलती है लेकिन दाहिने देखना और बोलना प्राय: अशुभ फल देता है।

शकुन-अपशकुन पहचानें

मनुष्य को जीवन में कई समस्याओं का सामना करना पड़ता है एवं इन समस्याओं के निवारण हेतु किसी ज्योतिष के पास जाते हैं अथवा अपने किसी भी अच्छे कार्य (लड़का-लड़की के संबंध, भूमि खरीदने) के लिए निकलते समय शुभ-अशुभ संकेत होते हैं अथवा घटना घटती है। इससे जिस कार्य के लिए जा रहे हों, उसकी सफलता-असफलता का अनुमान लगाया जाता है। इस पर विचार शिक्षित-अशिक्षित दोनों करते हैं। देखें घर से निकलते समय (शकुन) शुभ घटना एवं (अपशकुन) अशुभ घटना के संकेत।

शुभ शकुन

1. यदि आप किसी कार्य से जा रहे हैं तो आपके सामने सुहागन स्त्री अथवा गाय आ जाए तो कार्य में सफलता मिलती है।

2. जाते समय आप कपड़े पहन रहे हैं और जेब से पैसे गिरें तो धन प्राप्ति का संकेत है। कपड़े उतारते समय भी ऐसा हो तो शुभ होता है।

3. यदि आपके यहाँ सोकर उठते से ही कोई भिखारी माँगने आ जाए तो ये समझना चाहिए आपके द्वारा दिया गया पैसा (उधार) बिना माँगे वापस आ जाएगा।

4. आप सोकर उठे हों उसी समय नेवला आपको दिख जाए तो गुप्त धन मिलने की संभावना रहती है।

5. आप किसी कार्य से जा रहे हों, तब आपके सामने कोई भी व्यक्ति गुड़ ले जाता हुआ दिखे तो आशा से अधिक लाभ होता है।

6. लड़की के लिए आप वर तलाश करने जा रहे हों। तब घर से निकलते समय चार कुँवारी लड़कियाँ बातचीत करते मिल जाएँ तो शुभ योग होता है।

7. यदि शरीर पर चिड़िया गंदगी कर दे तो आपने समझना चाहिए आपकी दरिद्रता दूर होने वाली है। ये शुभ शकुन हैं, इसी प्रकार अपशकुन भी होते हैं। जानिए।

अपशकुन (अशुभ) घटना

1. कार्य पर जाते समय यदि बिल्ली रास्ता काट जाए तो कार्य असफल होने की आशंका रहती है। आप घर वापस आकर या थोड़ा विश्राम कर आगे जाएँ। तब कार्य सफल होगा।

2. कार्य पर जाते समय कोई दुष्ट प्रकृति वाला, व्यभिचारी अथवा अन्यायी, व्यभिचारिणी सामने आ जाए तो कार्य सफल नहीं होता।

3. शुभ कार्य के लिए विचार चल रहा हो तब यदि छिपकली की आवाज सुनाई दे तो कार्य की असफलता होती है।

4. घर में किसी देवता की मूर्ति अथवा चित्र टूट जाए तो मृत्यु या मृत्यु समान कष्ट हो सकता है। निवारण के लिए रामरक्षास्तोत्र अथवा दुर्गा माँ की आराधना करें।

5. यदि आपको आकाश में तारे टूटते दिखाई दें तो स्वास्थ्य खराब होने की सूचना होती है। इसी के साथ नौकरी में खतरा एवं आर्थिक तंगी आने लगती है।

6. आपके घर उल्लू के चिल्लाने की आवाज आ रही हो तो भूत बाधा का डर रहता है अथवा ऊपरी बाधा से ग्रसित हो सकते हैं, विशेषकर स्त्री।

7. कुत्ते का रोना अथवा सियार के रोने से रिश्तेदार, पड़ोसी या मोहल्ले में कष्ट (मृत्यु) की संभावना रहती है।

विशेष :

घर में उल्लू गिरे तो मानहानि, आयुहानि होती है। इसकी शांति के लिए यज्ञ-पूजन अथवा जाप करना चाहिए। जंगली कबूतर नहीं पालें, अशुभ माना गया है।

कुछ सूक्ष्म उपाय (टोटके)

1. कबूतर की बीट एवं लोभान की कंडे पर धूप देकर पूरे घर में धुआँ करें, सुबह-शाम अथवा रविवार, बुधवार घर में शांति मिलेगी।

2. घर का मुखिया रात्रि में चौराहे पर बाटी (आटे से गोल लड्डूनुमा) बनाए, बाटी सिर्फ पाँच बनाए। फिर उसका क्षेत्रपाल देवता के नाम से उसी स्थान पर कोण लगाकर रास्ता बदलकर घर आए। घर में पूर्ण शांति मिलेगी। यह कार्य चौदस, रविवार, अथवा अमावस्या पर करने से विशेष लाभ मिलेगा।

उपरोक्त शुभ-अशुभ शकुन का भारतीय परंपरा एवं संस्कार में बड़ा महत्व माना गया है। इन छोटे टोटकों से आप लाभ ले सकते हैं।

कौए का शगुन, कौए का इस तरह दिखना दिलाता है खूब धन लाभ

प्राचीन काल से ही हमारे बड़े-बुजुर्ग शगुन और अपशगुन के बारे में बताते हैं और इन सब के बारे में हमारे ग्रंथों में काफी कुछ लिखा भी गया है। हालांकि इन सभी बातों का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है लेकिन आज भी लोग इन बातों को मानते हैं। शगुन और अपशगुन में कौए का जिक्र भी आता है और उस पर शुभ और अशुभ चर्चा भी होती है। शकुनशास्त्र में इससे जुड़ी बातों का जिक्र भी किया गया है। आइए जानते हैं, कौआ किस तरह आपको धन लाभ का संकेत देता है।

कौआ का शगुन, मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि

सूर्योदय के समय घर के सामने कौआ बोले तो यह अच्छा शगुन माना जाता है। शगुनशास्त्र के अनुसार यह मान-प्रतिष्ठा और लाभ मिलने का सूचक है।

तो खूब धन लाभ होता है

कौआ चोंच से भूमि को खोदता हुआ दिखे तो यह अच्छा शगुन माना जाता है। माना जाता है कि इससे खूब सारा धन लाभ मिलता है।

चील गिद्ध के शगुन-अपशगुन

अगर आप किसी यात्रा पर जा रहे हैं और रास्ते में आपको सूखे पेड़ पर गिद्ध बैठा दिखाई पड़ जाए तो यह अपशगुन माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि आपको तुरंत अपनी यात्रा रोक देनी चाहिए। वहीं, घर की छत पर चील आकर बैठने लगे तो यह घर पर संकट का सूचक माना जाता है।

माना जाता है शुभ संकेत आ सकता है घर पर संकट कौआ अगर चोंच में तिनका, रोटी का टुकड़ा लिए दिख हुए दिख जाए तो आपको धन लाभ के साथ अन्य किमती वस्तुओं की प्राप्ति होती है। वहीं अगर कौए का झुंड घर की छत पर आकर शोर करने लगे तो घर के मालिक पर संकट आने वाला है, ऐसी मान्यताएं कहती हैं।हो सकता है धन लाभआप रास्ते में हों और आपको पानी पीते हुए कौआ दिख जाए तो आपको धन लाभ हो सकता है। साथ ही जिस काम के लिए जा रहे हों तो उसमें सफलता भी मिलेगी। वहीं अगर कौआ पंख फड़फड़ाता हुआ उग्र स्वर में बोले तो यह अशुभ संकेत माना जाता है।

मारवाड़ के पारंपरिक शकुन:

अक्षर तृतीया के शकुन

मकर संक्रांति के शकुन

होली के शकुन

दीपावली के शकुन

पशु पक्षियों द्वारा शकुन विचार

कौवे से संबंद्ध शकुन

उल्लू से संबद्ध शकुन

भ्रमर रा शकुन

तीतर रा शकुन

सुगनचिड़ी से संबद्ध शकुन

अन्य पक्षियों से संबद्ध शकुन

पशुओं से संबद्ध शकुन

लाल चींटी से संबद्ध शकुन वर्षा व अकाल संबंधी शकुन

यात्रा संबंधी शकुन

सुकमावली नामक ग्रंथ के अनुसार

छींक संबंधी शकुन

अंग फड़कन संबंधी शकुन

अंग फुरकण विचार नामक ग्रंथ के अनुसार

स्वरोदय द्वारा शकुन निर्णय

चंद्र स्वर में किये जाने वाले कार्य इस प्रकार है

सूरज के स्वर में इस तरह के कार्य करने शुभ माने जाते हैं

सूर्य व चंद्रग्रहण संबंधी शकुन

नक्षत्र आधारित शकुन

समाज में प्रचलित कुछ अन्य शकुन अपशकुन

शकुन (संवण) का मध्यकालीन मारवाड़ के सामाजिक जीवन में अत्यधिक महत्व रहा है। व्यापक पैमाने पर प्रभाव डालने वाले शकुन जो किसी भी प्राकृतिक आपदा के रुप में हो सकता है का निर्धारण कुछ विशेष तिथियों जैसे अक्षयतृतीया मकर संक्रांति होली दीपावली आदि शुभ अवसरों पर अनुभवी शकुनियों द्वारा किया रहा है। ये अच्छे व बुरे दोनों प्रकार के हो सकते हैं। इन शकुनों का ज्ञान प्रायः सभी सामान्य

जनों को था। रोजमर्रा की जिंदगी में उसका पालन करना आम बात थी। प्रत्येक शुभ कार्य के लिए अच्छे शकुन अपेक्षित रहे हैं।

राजस्थानी साहित्य में शकुन विषय पर गद्य और पद्य प्रबंध एवं मुक्त दोनों ही विद्याओं में लिखी गई है। शकुन साहित्य राजस्थानी संस्कृति की अमूल्य निधि माना जाता रहा है। राव मालदेव द्वारा रचित शकुनाशास्र इनमें से एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। इनमें विभिन्न परिस्थितियों में कई प्रकार के शकुन का सविस्तार उल्लेख किया गया है। इसमें वर्णित शकुन संबंधी कई मान्यताएँ आज भी मारवाड़ की ग्रामीण जनता में प्रचलित है। शकुनों को वे पूर्वजों के गहन चिंतन मौलिक मनन व अतीत की अनुभूति मानते हैं। लोगों पर शकुनों के प्रति विशेष आस्था शकुनों के सामाजिक महत्व को दर्शाता है।

मध्यकालीन मारवाड़ में शकुन ज्ञात करने के विभिन्न तरीके थे। कुछ महत्वपूर्ण तिथियों के आधार पर निर्धारित होते थे तो कुछ विभिन्न पशु- पक्षियों द्वारा निर्धारित किया जाता था। ऐसे तरीके सरल व अनुभव पर आधारित थे। कुछ शकुनों का निर्धारण जटिल गणितीय अंकों के आधार पर किया जाता है। ऐसे शकुन पासा केवली के नाम से जाने जाते थे। किसी भी नये या शुभ कार्य के लिए प्रस्थान करते समय जो मूहुर्त देखा जाता था उसमें वार नक्षत्र तिथि योग सभी का ध्यान रखा जाता था। सातों वारों के शकुन पर विस्तार से विवेचन हुआ है जिसका उल्लेख सात वार विचार नामक ग्रंथ में मिलता है।

अक्षर तृतीया के शकुन

अक्षय तृतीया (आरवातीज) को वर्ष भर के फलाफल सुकाल दुकाल संबंधी शकुन लेने की परंपरा रही है। गाँवों में अक्षय तृतीया के दिन या अमावस्या से तीन दिन तक अनुभवी शकुनी शकुन विचारते हैं। इसी विशेष दिन ये शकुनी गाँव के मुखिया के

सामने अपने शकुनों का निर्णय सुनाते हैं। कई बार शकुनियों में आपसी मतभेद भी होता है।

इस दिन हवा के बहाव तथा मध्याह्म के समय थाली में पानी भर कर सूर्य की परछाई देखकर शकुन ज्ञात किये जाते थे। शकुनों के आधार पर घोषणा की जाती है कि चौमासे के किस मास में वर्षा अधिक होगा तथा किसानों को कौन सा धान बोना लाभप्रद होगा। सूर्य की परछाई के आधार पर बताये गये शकुन कुछ इस प्रकार है

आरवात्रीज दिनै मध्यान समयै थाली पांणी सूं भर नै

सूरज मांहै जोइजै जिण दिस सूर्य रातो दिसै तो

तिण दिसै दिस विग्रह सूरज नीलो पीलो दीसै तो

धरती मांहे मांदवाड़ करवरो होई। रसकस मुंहगा।।

धवलो दिसै तो धांन घणा होइ सुकार मेह घणा

परजा सुखी। धुधलौ दीसै तो अन सुगाल काइंक

वाजै वाइ। राजवीहीयो दीसै तो तीड आवै।

स्याम दीसै तो दुरभख होइ।

मकर संक्रांति के शकुन

मकर संक्रांति के पश्चात पाँचवें सातवें नौवें और बीसवें दिन शुभ कार्य जैसे सगाई करना घर की नींव डालना आदि वर्जित है।

होली के शकुन

होली जलाते समय चलने वाली हवा के आधार पर भी शकुन ज्ञात किये जाते थे। इससे संबंधित कुछ दोहे यहाँ दिये जा रहे हैं।

पूर्व वाय वहंतो जोय तिडी मुसा नहचे होय।

अगन कूण रो वाजे वाय लाय चालौ का लट खाय।।

दीखण वाय वहै असराल तौ तुं जांणै नहचै काल।

नैरत कुण ऐ जो हुवै पवन देस विधावि निपजै कण।।

उतर वाय वहतौ जोय परजा दुख न देखे कोय।

भलो पवन जांणे इंसाण घर घर मंगल होय कल्याण।।

दीपावली के शकुन

दीपावली के पर्व पर कवड़ीया के शकुन लिये जाते थे। इस दिन यदि कवड़ीया कमल के फूल घर हाथी घोड़ा फले-फूले वृक्ष पर दिखाई पड़ता है तो शुभ माना जाता है परंतु यदि राख हड्डी चमड़ी काष्ठ सूखे तिनकों के ऊपर दिखाई पड़ता है तो अशुभ माना जाता है। उस वर्ष अच्छे फसल की उम्मीद नहीं की जाती।इस मौके पर विभिन्न पशु-पक्षियों के शकुन का भी प्रचलन रहा है।

पशु-पक्षियों द्वारा शकुन विचार

मध्यकालीन मारवाड़ के निवासी विभिन्न पशु पक्षियों द्वारा शुभ और अशुभ शकुनों को निर्धारित करते थे।

कौवे से संबंद्ध शकुन

कौआ अगर अपना घोंसला वृक्ष पर उत्तर तथा पूर्वी दिशा की डाली पर बनाता है तो इसका तात्पर्य था कि बहुत अच्छी वर्षा होगी। पैदावार बढ़ेगा तथा लोग निरोग व कुशल रहेंगे।

वृक्ष पर अग्निकोण व ईसान कोण में घोंसला डालने पर दूर्भिक्ष दक्षिण की तरफ घोंसला बनाने पर पृथ्वी पर हाहाकार व दुर्भिक्ष नैऋत्य कोण में सुनिप्र तथा पश्चिम की तरफ बनाने पर थोड़ी वर्षा तथा कम पैदावार होती है।

वृक्ष की ऊपरी शिखा पर घोंसला बनने पर सुभिक्ष अधबिच की डाली पर बनने से वर्षा के तथा पैदावार की कमी मानी जाती है।छोटी खेजड़ी (शमी वृक्ष) पर बना कौवे का घोसला देश में उत्कापात महामारी व चोरों के उत्पात की ओर इशारा करता है।सूखे वृक्ष पर बना कौवे का घोसला राजविग्रह दुर्भिक्ष तथा महाअनिष्ट का परिचायक है। सूने घर मंदिर व पर्वत शिखर पर बना घोंसला राज्य- विग्रह का सूचक है।